मेघनाद साह की याद में

रामकृष्ण भट्टाचार्य

मेघनाद साह (जन्म 6 अक्टूबर 1893, निधन 16 फरवरी 1956) किसी परिचय के मोहताज नहीं है। उत्तर बंगाल (अब बांग्लादेश में) के एक कम जाने-पहचाने गांव के गरीब परिवार में जन्म तथा पिछड़ी जाति के कहलाने वाले साह ने उन ऊंचाइयों को छुआ जो सम्पन्न और उच्च जाति वालों की पहुंच से भी बाहर हैं। वे सही मायनों में एक स्वाभिमानी, दृढ़निष्ठ तथा निर्मल व्यक्ति थे। उनकी प्रतिष्ठा स्वयं की बनाई हुई थी। उन्होंने डी.एससी. की उपाधि पच्चीस वर्ष की आयु में प्राप्त की, तथा 34 वर्ष की आयु में फेलो ऑफ रॉयल सोसायटी (एफ.आर.एस.) चुने गए। ऐस्ट्रोफिज़िक्स के क्षेत्र में उनकी शुरू से ही अपनी पहचान रही है। भारत में वे परमाणु ऊर्जा के अध्ययनों में अग्रणी रहे हैं। आपने वर्ष 1948 में नाभिकीय भौतिकी संस्थान की स्थापना की तथा उसके संचालक रहे। बाद में इस संस्थान का नाम उनके नाम पर उनकी उपलब्धियों को याद रखने के लिए रखा गया था।

जब स्वतंत्रता के बाद, संसद ने कैलेंडर संशोधन समिति गठित की तब साह, जो कि लोकसभा में निर्दलीय सदस्य थे, उसके अध्यक्ष बने। समिति की रिपोर्ट उनके ज्ञान का उत्तम उदाहरण है। वे खगोलशास्त्र सम्बंधी ग्रंथों से भलीभांति परिचित थे, फिर चाहे वे भारत के हों या युरोप के, प्राचीन हों या आधुनिक।

साह के विस्तृत अभिरुचि संसार में शोध के विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं। उनके छात्रों और प्रशंसकों के सामूहिक प्रयासों से प्रकाशित उनकी रचनाओं के संग्रह ने हमें उनके काम के आस्वादन और विवेचन का अवसर दिया है। 1930 में, जिस समय सुभाष चन्द्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष थे, साह ने ही राष्ट्रीय नियोजन की नींव रखी थी। हर वर्ष आने वाली बाढ़ों पर नियंत्रण के लिए उन्होंने नदी घाटी परियोजनाओं का अध्ययन किया।

भारतीय विज्ञान समाचार संगठन और उसकी पत्रिका *साइन्स एण्ड कल्चर* की स्थापना उनके महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। विज्ञान और वैज्ञानिक मिज़ाज के प्रचार हेतु वे लगातार इस पत्रिका में लेखन करते थे। उनके लिए विज्ञान और संस्कृति अलग-अलग नहीं थे। संस्कृति की उनकी अवधारणा में विज्ञान समाहित था। इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंस, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, इंडियन साइंस कांग्रेस व एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता में उनकी भागीदारी व योगदान उनकी रुचि और अनंत ऊर्जा शक्ति के ठोस प्रमाण हैं।

जैसा कि हमने पहले ज़िक्र किया, साह किसी सम्पन्न परिवार में पैदा नहीं हुए थे। उनकी हमदर्दी सदैव वंचितों के प्रति थी। उन्होंने तत्कालीन सोवियत संघ के विकास में सक्रिय रुचि ली थी। 1917 की नवंबर क्रांति उनके लिए

विश्व इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। सोवियत संघ की यात्रा के बाद तो समाजवाद में उनकी आस्था और दृढ़ हो गई। यात्रा के बाद उन्होंने एक पुस्तिका भी लिखी थी: *'माई एक्सपीरिएंस इन रशिया'* (रूस में मेरे अनुभव)।

वे पुरातनपंथी विचारों और धार्मिक कट्टरता के घोर विरोधी रहे। अपने ही स्वार्थ के लिए जीने से उन्हें सख्त नफरत थी। वे सरकार की भी आलोचना इस बात के लिए करते थे कि वह भारतीय राजाओं और धनाढ्य लोगों के पास जमा अकूत खज़ाने को उनसे छुड़ाकर राष्ट्रीय महत्व के कामों में लगाने का प्रयास नहीं कर रही है। ज़ाहिर है कि इन विचारों वाले व्यक्ति को हुक्मरानों और यथास्थिति के हिमायतियों का समर्थन नहीं मिला।

इस संक्षिप्त आलेख का समापन हम उनके जीवन की एक ऐसी घटना के साथ कर सकते हैं जो बंगाल के बाहर प्रायः ज्ञात नहीं है। एक बार उन्हें विश्वभारती में छात्रों व अध्येताओं को सम्बोधित करने के लिए स्वयं रविन्द्रनाथ टैगोर ने आमंत्रित किया था। साह ने वहां 'जीवन का एक नया दर्शन' विषय पर संक्षिप्त व्याख्यान दिया था। यह व्याख्यान उस समय अखबारों में भी खूब छपा था और 1938 में विश्वभारती समाचार में प्रकाशित भी किया गया था। इसका बंगाली अनुवाद भारतवर्ष पत्रिका में भी प्रकाशित हुआ था। उस समय अनिलबरन राय अरबिन्द आश्रम, पाण्डिचेरी में थे। राय एक अध्यात्मवादी थे और उन्होंने साह के व्याख्यान की यह कहकर तीखी आलोचना की थी कि वह हिन्दुत्व को बदनाम करने का प्रयास था। राय को साह का जीवन के प्रति धर्मनिरपेक्ष नज़रिया भी आपत्तिजनक लगा था। साह इस पर खामोश नहीं बैठे। उन्होंने इस आलोचना का जवाब दिया और राय द्वारा कही गई हर बात का खण्डन किया। पूरे विवाद ने काफी तूल पकड़ लिया और इस पूरे घटनाक्रम में हमें साह के गहरे अध्ययन और जुझारू प्रवृत्ति का दर्शन होता है। पूरे विवाद का अनुवाद अंग्रेज़ी के अलावा देश की लगभग सभी भाषाओं में हो चुका है और विज्ञान व अध्यात्म के टकराव में रुचि रखने वालों के लिए यह एक अमूल्य धरोहर है। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत जनवरी 2004
अंक 182

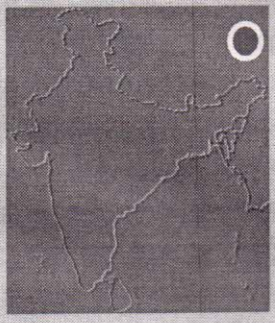

- हम, भारत के लोग, कौन हैं?
- सजीव कंडोम बचाएंगे एड्स से
- कितनी पृथ्वियां हैं ब्रह्मांड में?
- पेटेंट अधिकार और दवाइयां
- 'सबके लिए स्वास्थ्य' के पच्चीस वर्ष